

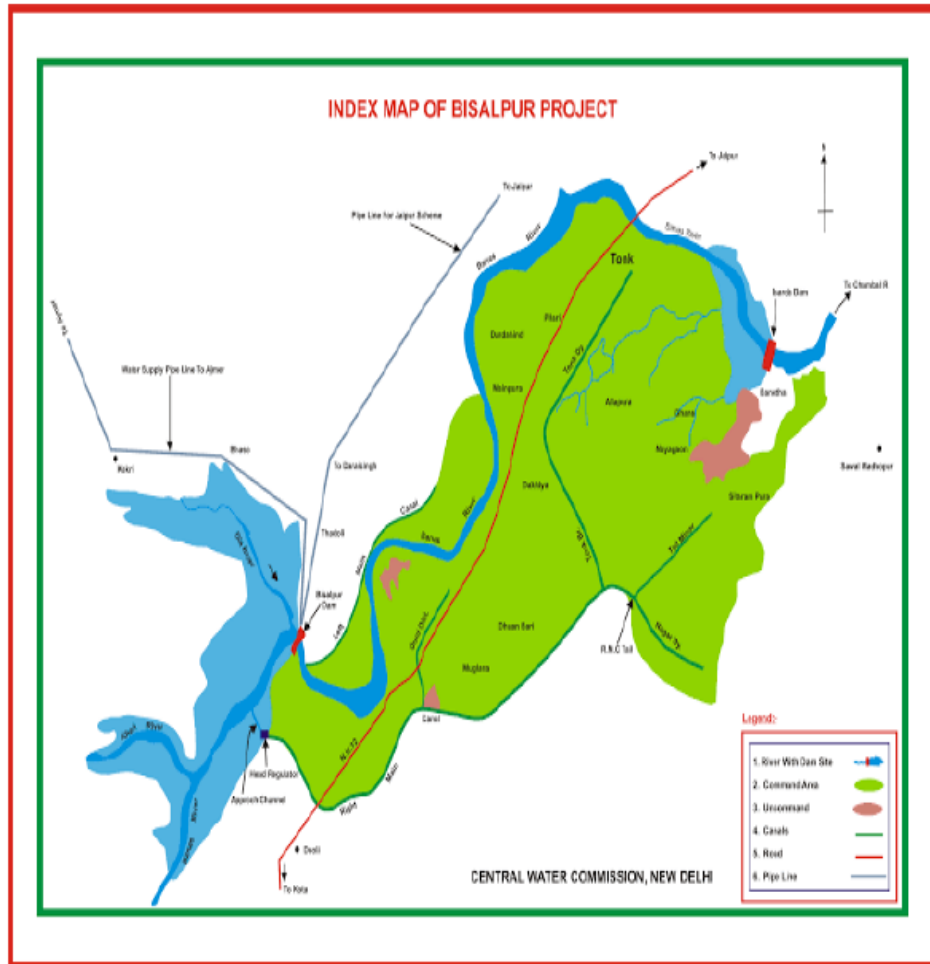
टोंक ज़िले में बीसलपुर बाँध परियोजना का विकास एक भौगोलिक अध्ययन

संजय कुमार दुकारिया
बिबोलाओ, जिला टोंक, राजस्थान

शोध सारांश

जल सभी विकासात्मक गतिविधियों के लिए मूलभूत आवश्यकता का आधार है। अतः जल संसाधनों का सुव्यवस्थित प्रबन्धन सुनियोजित विकास का अंग है। राजस्थान राज्य की स्थलाकृति एवं भू-विज्ञान के कारण राज्य के विभिन्न भागों में जल संसाधन का वितरण समान नहीं है। अरावली पर्वत श्रेणियों की श्रृंखला प्रदेश को दो भौगोलिक खण्डों में विभाजित करती है प्रथम उत्तर-पश्चिम खण्ड में जो मरुस्थलीय भाग है जिसमें प्राकृतिक जल की कम उपलब्धता के साथ वर्षा भी बहुत कम होती है। दूसरा दक्षिण-पूर्वी भाग जहां पर्वत श्रृंखलाओं के कारण वर्षा का जल उचित जल संग्रहण एवं प्रबन्धन के अभाव में जल व्यर्थ बह जाता है। अतः वर्षा जल को अधिकाधिक संग्रहित कर उसका उपयोग सिंचाई एवं पीने योग्य जल उपलब्ध कराने में किया जाना आवश्यक है। अतः टोंक जिले के बीसलपुर ग्राम के पास बीसलपुर बांध बनाकर उसमें संग्रहित जल से दो नहर निकाल कर बीसलपुर के कमाण्ड क्षेत्र में सिंचाई एवं पीने हेतु जल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से केन्द्रीय प्रवर्तित योजना के अन्तर्गत भारत सरकार के जल संसाधन मंत्रालय के आदेश से वर्ष 2006 में सिंचित क्षेत्र विकास बीसलपुर परियोजना प्रारम्भ की गई थी।

मुख्य बिन्दु :- बनास नदी, बीसलपुर बाँध परियोजना, अन्य बाँध, बीसलपुर सिंचाई परियोजना का विकास, न्यादर्श परिकल्पना, वित्तीय प्रगति, पेयजल की समस्या का समाधान, अन्य कार्य व निष्कर्ष।



परिचय :-

राजस्थान में दक्षिण पूर्वी भू-भाग में भौगोलिक परिवेश नदियों से परिपूर्ण है तथा अधिकांश नदियों में वर्ष भर पानी रहता है। राजस्थान के दक्षिणी एवं दक्षिण पूर्व भू-भाग में राजस्थान में सबसे अधिक वर्षा होने के कारण नदियों में पर्याप्त जल बना रहता है। इस क्षेत्र में बनास नदी प्रमुख है। इस नदी पर राजमहल के पास बीसलपुर बाँध बनाया गया है। इस बाँध में वर्षा का जल एकत्रित किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में बाँध बनाये गये हैं, तथा वर्षाकाल में जल स्तर बढ़ जाने पर समय-समय पर गेट खोले जाकर अतिरिक्त पानी नदी/नहरी क्षेत्र में छोड़ा दिया जाता है, जिससे बाँध पर दबाव पैदा नहीं होता है। अधिक वर्षा होने पर बीसलपुर बाँध के द्वार खोलकर बनास नदी में जल छोड़ा जाता है, जिससे जल स्तर सामान्य बना रहता है। जिले में भू-जल स्तर में वृद्धि एवं सिंचाई के उद्देश्य से लघु एवं मध्यम सिंचाई परियोजनाओं के अन्तर्गत बाँध बनाये गये हैं। इन बाँधों के माध्यम से कृषि कार्यों में सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराया जाता है।

उद्देश्य :-

- 1 बीसलपुर बाँध परियोजना में महत्व का भौगोलिक अध्ययन किया गया।
- 2 बीसलपुर परियोजना के विकास को स्पष्ट किया गया।

परिकल्पना :-

बीसलपुर बाँध परियोजना से क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हुआ है।

आँकड़ों के स्रोत :-

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक व द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से सूचनाएं प्राप्त की गईं। द्वितीयक सूचनाएं प्रकाशित व अप्रकाशित स्रोतों का अध्ययन करके उपयोग की गईं।

बनास नदी :-

टोंक जिले में प्रमुख नदी बनास है। बनास एक मात्र ऐसी नदी है जो संपूर्ण चक्र राजस्थान में ही पूरा करती है। वन + आस अर्थात् बनास अर्थात् (वन की आशा) के रूप में जानी जाने वाली यह नदी राजसमंद जिले के अरावली पर्वत श्रेणियों में कुंभलगढ़ के पास 'खमनोर की पहाड़ी' से निकलती है। यह नाथद्वारा, राजसमंद और भीलवाड़ा जिलों में बहती हुई टोंक, सवाई माधोपुर के पश्चात रामेश्वरम सवाईमाधोपुर के समीप चंबल में गिर जाती है। इसकी लंबाई लगभग 480 किलोमीटर है। इसकी सहायक नदियों में बेडच, कोठरी, मांसी, खारी, मोरेल व धुन्ध ढील डार्ई है। बेडच नदी 190 किलोमीटर लंबी है तथा गोगुन्दा पहाड़ियों (उदयपुर) से निकलती है। कोठरी नदी उत्तरी राजसमंद जिले के दिवेर पहाड़ियों से निकलती है। यह 185 किलोमीटर लंबी है तथा यह उदयपुर, भीलवाड़ा में बहती हुई बनास में मिल जाती है। यह नदी ढलानयुक्त क्षेत्रों में कुछ अपवाह तंत्र बनती है। यह नदी जिले के मध्यवर्ती भाग से निकलती है और जिले के दो भागों में विभक्त करती है। यह नदी टोंक जिले के दक्षिणी भाग में बहती है। वर्षा तेज होने पर बनास नदी का बहाव बढ़ जाता है जिससे आस-पास के क्षेत्रों में भू-जल स्रोतों में वृद्धि हो जाती है।

बीसलपुर बाँध परियोजना :-

बीसलपुर बांध का निर्माण 1990 के दशक में राजस्थान राज्य सरकार द्वारा किया गया था। निर्माण के दौरान बांध से विस्थापित लोगों ने राज्य सरकार की पुनर्वास एवं पुनर्वास नीति को अन्यायपूर्ण बताते हुए इसका विरोध किया था। अक्टूबर 1999 में, अशोक गहलोत के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार ने बीसलपुर जलाशय का पानी राज्य की राजधानी जयपुर में लाने के लिए एक परियोजना को मंजूरी दी। हालाँकि, वित्तीय बाधाओं के कारण परियोजना को क्रियान्वित नहीं किया जा सका। 2004 में, वसुंधरा राजे के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने जयपुर में बीसलपुर का पानी लाने के लिए एक पाइपलाइन का निर्माण शुरू किया। इस परियोजना को एशियाई विकास बैंक (एडीबी) और जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जेआईसीए) द्वारा सह-वित्तपोषित किया गया था। (4) एडीबी ने ट्रांसमिशन सिस्टम (शुद्धिकरण सहित) को वित्तपोषित किया, जबकि जेआईसीए ने 1.3b की ब्याज दर पर 8.88 बिलियन येन 30-वर्षीय ऋण के साथ ट्रांसफर सिस्टम को वित्तपोषित किया। (5) सिंचाई के लिए बीसलपुर के पानी पर निर्भर किसानों ने इस

परियोजना का विरोध किया था। 13 जून 2005 को बीसलपुर का पानी जयपुर की ओर मोड़ने का विरोध कर रहे 5 किसानों की गोली मारकर हत्या कर दी गई। 2009 में बीसलपुर का पानी जयपुर पहुंच गया, जिससे आसपास के जिलों जैसे अजमेर, भीलवाड़ा, दौसा और टोंक में सार्वजनिक विरोध प्रदर्शन हुआ, जिनके निवासियों ने पानी में हिस्सेदारी की मांग की।



अन्य प्रमुख बाँध :-

टोंक ज़िले में चाँदपुर बाँध मालपुरा तहसील में है। मालपुरा में चांदसेन के भेरू सागर बाँध में लगातार पानी की आवक जारी रहने से बाँध का गेज 12 फुट तक पहुंच गया। वर्ष 2019 में बाँध की भराव क्षमता 20 फुट जल की आवक हुई। वर्ष 2019 में लगातार बारिश से बाँध में पानी की अच्छी आवक हुई। जल संसाधन विभाग मालपुरा से मिली जानकारी अनुसार उपखंड के प्रमुख जलाशय टोरडी सागर बाँध में वर्ष 2019 में 16 फुट 10 इंच पानी भरा। इसी प्रकार वर्ष 2019 में हालोलाव कलमंडा बांध में 9 फुट व लांबाहरिसिंह के रामसागर बांध में 10 फुट 8 इंच पानी की आवक हुई। गणवर के रामसागर बांध में 10 फुट व किरावल सागर में 11 फुट 9 इंच पानी भराव हुआ है। भावलपुर केरवालिया बाँध में 7 फुट 10 इंच व घारेड़ा सागर में 9 फुट 6 इंच तथा ढीबरू सागर बांध में 7 फुट 11 इंच एवं सहोदरा में 6 फुट 11 इंच, बोटूदा परियोजना में 1 फुट 6 इंच पानी है। टोंक जिले में बाँधों का विवरण क्षमता एवं पूर्ण भराव है।

बीसलपुर सिंचाई परियोजना का विकास :-

बीसलपुर बांध राजस्थान के टोंक जिले में बनास नदी पर बना है। इसका निर्माण कंक्रीट से हुआ है। यह बांध जयपुर, टोंक, अजमेर सहित कई शहरों की प्यास बुझाता है व सिंचाई की जरूरतों को पूरा करता है। बीसलपुर राजस्थान के टोंक जिले में स्थित एक गाँव है और यह अपने भगवान गोकर्णेश्वर के प्राचीन मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। बनास नदी पर बनाया गया बीसलपुर बाँध बीसलपुर का दूसरा आकर्षण है जो इस गाँव को चर्चा में लाता है। यह बाँध दो चरणों में बनाया गया। पहले चरण का उद्देश्य गाँव के लोगों को पीने का पानी उपलब्ध करवाना था जबकि दूसरे चरण का उद्देश्य सिंचाई की सुविधाओं में सुधार लाना था। यह बाँध 574 मीटर लंबा और 39.5 मीटर ऊँचा है। यह

देवली तहसील के अंदर आता है, जो देवली से 25 किमी की दूरी पर स्थित एक दर्शनीय स्थल है। जो बनास नदी पर स्थित है।

राज्य के टोंक जिले के थंडोली ग्राम के पास बनास नदी पर निर्मित बीसलपुर बाँध की पानी की कुल संग्रहण क्षमता 38.7 टी.सी.एम. है जिसमें से 16.2 टी.सी.एम. जल पीने योग्य जल वितरण हेतु एवं 8.00 टी.सी.एम. जल बाँध के कमाण्ड ऐरिया में सिंचाई हेतु निर्धारित किया गया है। बाँध कमाण्ड ऐरिया की कुल 81800 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई कार्य बाँध से निकलने वाली दो मुख्य नहरों यथा दाईं मुख्य नहर एवं बांयी मुख्य नहर के माध्यम से किया जाता है। वर्ष 2005-06 में दांयी एवं बांयी मुख्य नहर का कार्य पूर्ण होने के पश्चात् दांयी एवं बांयी मुख्य नहर के कमाण्ड में आने वाली 81800 हेक्टेयर भूमि के लिए सिंचाई हेतु जल प्रवाह का कार्य प्रारम्भ किया गया था। कृषकों के खेतों में सिंचाई हेतु जल पहुंचाने का कार्य कच्ची खालों, पम्पों एवं पाईप लाइन के माध्यम से किया जाता था।

सिंचाई की यह प्रक्रिया खर्चीली होने के कारण जहां एक ओर छोटे कृषकों द्वारा इसका व्यय भार वहन नहीं हो पा रहा वहीं दूसरी ओर सुनियोजित जल प्रबन्धन के कारण जल की भारी मात्रा में क्षति होती थी। अतः जल का समुचित उपयोग एवं उचित जल प्रबन्धन की आवश्यकता के मध्यनजर जल संसाधन मंत्रालय के निर्देशानुसार केन्द्रीय प्रवर्तित योजना के अन्तर्गत सिंचित क्षेत्र विकास बीसलपुर परियोजना प्रारम्भ कर 129.37 करोड़ रुपये की लागत से दोनों मुख्य नहरों के कमाण्ड क्षेत्र में 1278 पक्की खालों (वाटर कोर्स) के निर्माण कार्य प्रारम्भ किये गये जिसमें एक तरफ कच्ची खालों से व्यर्थ होने वाले पानी की हानि को रोका जा सके, वही दूसरी ओर छोटे किसानों को जल कम लागत पर उपलब्ध हो सके।

टोंक जिले के थंडोली ग्राम के पास बनास नदी पर निर्मित बीसलपुर बाँध की पानी की कुल संग्रहण क्षमता 38.7 टी.सी.एम. है जिसमें से 16.2 टी.सी.एम. जल पीने योग्य जल वितरण हेतु एवं 8.00 टी.सी.एम. जल बाँध के कमाण्ड ऐरिया में सिंचाई हेतु निर्धारित किया गया है। बाँध कमाण्ड ऐरिया की कुल 81800 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई कार्य बाँध से निकलने वाली दो मुख्य नहरों यथा दाईं मुख्य नहर एवं बांयी मुख्य नहर के माध्यम से किया जाता है।

दांयी मुख्य नहर :-

बीसलपुर बाँध से दांयी और निकलने वाली मुख्य नहर की कुल लम्बाई 51.64 कि.मी. है जो बाँध कमाण्ड क्षेत्र टोंक एवं उनियारा तहसील के 218 ग्रामों की 69393 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराती है।

बांयी मुख्य नहर :-

बीसलपुर बाँध से बांयी और निकलने वाली मुख्य नहर की कुल लम्बाई 18.65 कि.मी. है जो कमाण्ड क्षेत्र की टोडारायसिंह तहसील के 38 ग्रामों की 12407 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराती है।

न्यादर्श परिकल्पना :-

योजना क्रियान्वयन विभाग द्वारा वर्ष 2007-08 से वर्ष 2014-15 तक दांयी मुख्य नहर पर 10, टोंक ब्रांच पर 7 एवं बांयी मुख्य नहर पर 7 कुल 24 वितरिकाओं से निकाली गई 86 माइनर एवं 32 सब-माइनर नहरों पर निर्मित कुल 661 खालों (वाटर कोर्स) की निर्माण क्रमानुसार उपलब्ध करायी गई सूचनाओं एवं विभाग के पास उपलब्ध सीमित संसाधनों की ध्यान में रखते हुये अध्ययन हेतु बहुस्तरीय न्यादर्श प्रणाली का उपयोग करते हुये निम्न प्रकार से न्यादर्श का चयन किया गया।

वितरिकाओं के निर्माण क्रम को ध्यान में रखते हुये दांयी मुख्य नहर, टोंक शाखा तथा बांयी मुख्य नहर प्रत्येक से प्रारम्भ, मध्य तथा अन्तिम छोर वाली 3-3 वितरिकाओं का चयन किया गया। वितरिकाओं का चयन करते समय कम से कम एक ऐसी वितरिका का चयन किया गया जिसमें वितरिका पर सीधे खालों (वाटर कोर्सों) का निर्माण किया गया। इस प्रकार कुल 9 वितरिकाओं का चयन किया गया। प्रत्येक चयनित खालें से 5-5 लाभार्थी कृषकों का चयन कर व्यक्तिगत साक्षात्कार तथा भौतिक सत्यापन के माध्यम से उनके विचार एकत्रित किये गये। इस प्रकार मूल्यांकन हेतु दांयी मुख्य नहर तथा टोंक शाखा से 60-60 तथा बांयी मुख्य नहर के 50 कुल लाभार्थियों में से 2 लाभार्थियों से सम्पर्क स्थापित नहीं होने के कारण 48 लाभार्थी अनुसूचियाँ भरी गई। इस प्रकार कुल 168 लाभार्थियों से सम्पर्क स्थापित कर अनुसूचियाँ भरी गई। परियोजनान्तर्गत दो मुख्य नहरों एवं एक ब्रांच नहर से निकलने वाली वितरिकाओं पर एवं मुख्य नहरों पर

12265.92 लाख रुपये की लागत से 794 वाटर कोर्सों (खालों) का निर्माण कर कमाण्ड क्षेत्र में सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराया गया।

वित्तीय प्रगति :-

केन्द्र सरकार के सहयोग से 12937 लाख रुपये की स्वीकृत बीसलपुर सिंचित क्षेत्र विकास परियोजना वर्ष 2006 में 50 : 40 : 10 प्रतिशत के अनुपात में खर्च वहन के आधार पर प्रारम्भ की गई जिसके अन्तर्गत 50 प्रतिशत हिस्सा केन्द्र सरकार, 40 प्रतिशत हिस्सा राज्य सरकार एवं 10 प्रतिशत हिस्सा कृषक द्वारा वहन किये जाने का प्रावधान है।

वर्ष 2014-15 तक 12660.41 लाख रुपये के आवंटन के विरुद्ध 12265.92 लाख रुपये प्राप्त हुये। बीसलपुर सिंचित क्षेत्र विकास परियोजना की कुल स्वीकृत राशि 12937 लाख रुपये के विरुद्ध वर्ष 2014-15 तक कुल 12660.41 (97.86 प्रतिशत) लाख रुपये का आवंटन हुआ जिसमें से 5151.08 (40.69 प्रतिशत) लाख रुपये केन्द्र सरकार द्वारा एवं 7509.33 (59.31 प्रतिशत) लाख रुपये की राशि राज्य सरकार द्वारा आवंटित की गई। परियोजनान्तर्गत आवंटित कुल राशि 12660.41 के विरुद्ध 12265.92 (96.88 प्रतिशत) लाख रुपये की राशि प्राप्त हुई जिसमें से 11016.41 (89.81 प्रतिशत) लाख रुपये की राशि व्यय की गई। केन्द्र सरकार से प्राप्त 5151.08 लाख रुपये में से 4446.75 (86.33 प्रतिशत) लाख रुपये एवं राज्य सरकार से प्राप्त 7114.84 लाख रुपये में से 6569.65 (92.33 प्रतिशत) लाख रुपये राशि व्यय की गई। योजनान्तर्गत प्राप्त राशि का केवल 11016.41 (89.81 प्रतिशत) राशि का ही उपयोग किया गया शेष 10.19 प्रतिशत राशि का उपयोग नहीं किया गया।

राजस्थान की सबसे बड़ी पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ईआरसीपी) ने सरकार के आदेश पर टेंडर प्रक्रिया पूरी कर ली है। परियोजना के अभियंताओं के अनुसार बांध के जलभराव से मिट्टी, पत्थर, बजरी के साथ मलबा निकालने के बाद बांध के जलभराव में दस प्रतिशत तक कम हुई जलभराव क्षमता वापस बढ़ जाएगी। बीसलपुर बांध का कुल जलभराव 315.50 आर एल मीटर है। इसमें 38.70 टीएमसी पानी का जलभराव होता है।

पेयजल की समस्या का समाधान :-

बीसलपुर बांध से मिलने वाले पेयजल की समस्या समाधान के लिए कंट्रोल रूप बनाया

ज़िले के देवली, उनीयारा ब्लॉक के 464 गांवों में बीसलपुर बांध से पानी मिलने में कोई समस्याओं हो, तो उसके समाधान के लिए प्रशासन ने कंट्रोल रूप स्थापित किया है। गर्मी बढ़ने के साथ ही कई जगह पानी की समस्या एवं पानी सप्लाई में व्यवधान की शिकायतें भी बढ़ने लगी है। इसको देखते हुए प्रशासन पेयजल को लेकर गंभीर हो गया है। रविवार को जलदाय विभाग की ओर से अधिकांश आबादी में पहुंच रहे बीसलपुर बांध के पानी सप्लाई में आने वाली समस्या से निजात दिलाने के लिए कंट्रोल स्थापित किया है।

राजमहल. बीसलपुर बांध बनने के बाद से जलभराव क्षेत्र में एकत्र होते मलबे, पत्थर, बजरी, मिट्टी आदि निकालने की प्रक्रिया दो माह बाद यानि मानसून सत्र समाप्त होने के बाद शुरू कर दी जाएगी। जिसको लेकर राजस्थान की सबसे बड़ी पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ईआरसीपी) ने सरकार के आदेश पर टेंडर प्रक्रिया पूरी कर ली है। परियोजना के अभियंताओं के अनुसार बांध के जलभराव से मिट्टी, पत्थर, बजरी के साथ मलबा निकालने के बाद बांध के जलभराव में दस प्रतिशत तक कम हुई जलभराव क्षमता वापस बढ़ जाएगी। योजना पर कार्य करने वाली गुजरात की घडियां एंड कम्पनी बजरी पत्थर आदि के बदले सरकार को 2800 करोड़ रुपए तक देगी।

बीस साल का अनुबंध :-

बांध के जलभराव क्षेत्र में पानी से मलबा पत्थर बजरी आदि निकालने का अनुबंध बीस वर्ष का है। यानि मानसून सत्र के बाद कार्य शुरू होने से बीस वर्ष तक कम्पनी जलभराव से बजरी आदि निकालने का कार्य करेगी। इस दौरान पत्थर, गिट्टी, मिट्टी, बजरी आदि निकालने के लिए काम में लिए जाने वाले संसाधन भी गुजरात की घडियां एंड कम्पनी के ही होंगे। जिसमें पानी में दौड़ने वाले जहाज रूपी यंत्र काम में लिए जाएंगे। ये है जलभराव क्षेत्र

बीसलपुर बांध का कुल जलभराव 315.50 आर एल मीटर है। इसमें 38.70 टीएमसी पानी का जलभराव होता है। कुल जलभराव के दौरान 21 हजार 300 हैक्टेयर भूमि जलमग्न होती है। जलभराव में बनास, खारी व डाई नदियों का हिस्सा पड़ता है। बांध का कुल जलग्रहण क्षेत्र 27726 वर्ग किमी है।

पूर्व में रोका गया है 19071 वर्ग किमी वही अब तक स्वतंत्र रहा 8655 वर्ग किमी। बांध की समुद्र तल से ऊंचाई (उच्चतम स्तर) 322.50 मीटर है। नदी तल स्तर से ऊंचाई 27.5 मीटर (90 फिट) , ऊंचाई नीव स्तर से 39.5 मीटर (130 फिट)। कुल गेट 18 साइज 15म14 मीटर है। पहली बार पूर्ण जलभराव 2004 में हुआ। अब तक छलका 2004, 2006, 2016, 2019, 2022 में पूर्ण जलभराव के बाद छलक चुका है।

भंडारण कम्पनी के अधीन :-

बीसलपुर बांध से बजरी, पत्थर, मलबा आदि निकालने के बाद उनका भंडारण भी जलभराव किनारे की भूमि पर किया जाएगा। खाली राजस्व भूमि या कब्जेशुदा भूमि अतिक्रमण मुक्त करवाकर सरकार की ओर से कम्पनी को उपलब्ध कराएगी। आवश्यकता पर संवेदक की ओर से अपने स्तर पर किराए से भूमि लेनी होगी। बीसलपुर बांध के जलभराव क्षेत्र से मिट्टी,मलबा,बजरी पत्थर आदि निकालने की टैंडर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। वही योजना पर कार्य बारिश बाद अगले दो में शुरू करवा दिया जायेगा। योजना के तहत गुजरात की घड़ियां एंड कम्पनी संवेदक के तौर पर कार्य करेगी।

राजधानी जयपुर, टोंक और अजमेर समेत जिलों की प्यास बुझाने वाले बीसलपुर बांध को लेकर अच्छी खबर मिली है। बीसलपुर बांध की संग्रहण क्षमता बढ़ाई जा रही है। इसके बाद बीसलपुर बांध में आधा मीटर पानी और अधिक संग्रहित हो सकेगा। इसके बाद जयपुर महानगर सहित कई जिलों को पेयजल संकट का सामना नहीं करना पड़ेगा। इस योजना को लेकर पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना की ओर से सर्वे कार्य करवा दिया गया है। अब केवल राज्य सरकार से अनुमति मिलना बाकी है। योजना पर सरकार की ओर से हरी झंडी मिलने के बाद बीसलपुर बांध की जल भराव क्षमता बढ़ाने का काम शुरू कर दिया जाएगा।

बांध की ऊंचाई बढ़ाने में 350 करोड़ रुपए की आएगी लागत :-

बीसलपुर बांध की वर्तमान पूर्ण जल भराव क्षमता 315.50 आर एल मीटर है। इस जल भराव क्षमता के कारण बांध में 38.70 टीएमसी पानी संग्रहित होता है। अगर इस नई योजना को मंजूरी मिल जाती है तो, इसके बाद बीसलपुर बांध की जल भराव क्षमता 316 आर एल मीटर हो जाएगी। बीसलपुर बांध की जल भराव क्षमता बढ़ाने में 350 करोड़ रुपए की लागत आएगी। वहीं आधा मीटर जल भराव क्षमता बढ़ने के बाद बांध में 3.5 टीएमसी पानी का अधिक संग्रहण हो सकेगा। वहीं बीसलपुर बांध की कुल जल भराव क्षमता 38.70 टीएमसी से बढ़कर 42.2 टीएमसी तक पहुंच जाएगी।

भराव क्षमता बढ़ने से इतनी जमीन होगी जलमग्न :-

बीसलपुर बांध की जल भराव क्षमता बढ़ाने के बाद जलमग्न होने वाली जमीनों का दायरा बढ़ेगा। वर्तमान में बांध की भराव क्षमता 315.50 आर एल मीटर है। इस जलभराव के चलते वर्तमान में 21 हजार 300 हेक्टेयर भूमि बनास नदी में डूबी हुई है। ऐसी स्थिति में अगर बांध का जलभराव आधा मीटर तक बढ़ाया गया तो जल में डूबने वाली जमीन का दायरा बढ़ जाएगा। इस दौरान 300 हेक्टेयर भूमि और जलभराव में डूब जाएगी। यानी बीसलपुर बांध के लेवल 316 आर एल मीटर के स्तर पर कुल 21 हजार 600 हेक्टेयर भूमि बनास नदी की डूब में आएगी।

नौनेरा बांध से बीसलपुर को मिलेगा पानी :-

बीसलपुर बांध मुख्यतः मानसून पर निर्भर रहता है। बांध को भरने वाली नदियों में बनास नदी, खारी और डाई प्रमुख नदियां हैं। जो मानसून में सक्रिय होती हैं। लेकिन कई बार मानसून कमजोर होने के चलते बांध नहीं भर पाता है। ऐसी स्थिति में जयपुर समेत कई जिलों को पेयजल संकट से जूझना पड़ता है। लिहाजा राज्य सरकार ने एक नई योजना बनाई है। इसके तहत कोटा जिले के कालीसिंध नदी पर दीगोद के निकट नौनेरा बांध का निर्माण किया जा रहा है। जिसका करीब 55b कार्य पूरा हो चुका है। इस दौरान 37 हजार 5 सौ करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले इस बांध का पानी बीसलपुर बांध में लाया जाएगा। जिसके कारण बीसलपुर बांध में पानी का संकट कभी खड़ा नहीं होगा। वहीं नौनेरा बांध बनने से बीसलपुर बांध पर निर्भर सभी जिलों को पर्याप्त जलापूर्ति हो सकेगी।

बांध के गेटों की ऊंचाई भी बढ़ाई जाएगी :-

बीसलपुर बांध की भराव क्षमता आधा मीटर बढ़ाने की योजना शुरू करने के बाद काम पूरा होने में 2 से 3 साल का समय लग जाएगा। इस दौरान बीसलपुर बांध के सभी गेटों की ऊंचाई बढ़ाई जाएगी। जो पानी को आधा

मीटर तक अधिक बांध में संग्रहित करेगा। इसके अलावा जलमग्न होने वाली 300 हेक्टेयर भूमि के किसानों को मुआवजा भी दिया जाएगा। जानकारी के अनुसार वर्तमान में बीसलपुर बांध क्षेत्र के 68 गांव बनास नदी की डूब क्षेत्र में है।

निष्कर्ष :-

अतः क्रियान्विति संस्था को चाहिए कि परियोजनान्तर्गत प्राप्त राशि का पूर्ण उपयोग कर कृषकों को अधिकाधिक सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने हेतु तत्पर रहना चाहिए एवं संस्था को चाहिये कि वह कार्य योजना इस प्रकार से तैयार करें कि प्राप्त राशि का पूर्ण उपयोग सम्भव हो सके। परियोजनान्तर्गत व्यय की गई कुल राशि का 32.83 प्रतिशत यानि 3616.84 लाख रुपये वेतन भत्तों एवं प्रशासनिक खर्चों पर व्यय की गई एवं शेष 67.17 प्रतिशत यानि 7399.57 लाख रुपये अन्य अर्थात् निर्माण कार्यों पर व्यय की गई।

सन्दर्भ सूची :-

1. "भारत: बड़े बांधों का राष्ट्रीय रजिस्टर 2009" (पीडीएफ)। केंद्रीय जल आयोग. मूल (पीडीएफ) से 21 जुलाई 2011
2. अनिल अग्रवाल; सुनीता नारायण; सरबानी सेन (1999)। नागरिकों की पांचवीं रिपोर्ट: राष्ट्रीय अवलोकन। विज्ञान और पर्यावरण केंद्र। पी। 149. ओसीएलसी 928953166।
3. "जयपुर के लिए एक प्रमुख जल परियोजना"। हिन्दू। 30 जनवरी 2004.
4. जोनास जोरिन; राजीव शॉ; आरआर कृष्णमूर्ति (2014)। लचीले शहरी समुदायों का निर्माण। पन्ना। पी। 19. आईएसबीएन 978-1-78350-906-5.
5. "भारत में गतिविधियाँ"। जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी। 10 जनवरी 2017 को लिया गया।
6. वंदना शिवा (2006)। पृथ्वी लोकतंत्र: न्याय, स्थिरता और शांति। जेड. पी। 177. आईएसबीएन 978-1-84277-777-0.
7. भानु प्रताप सिंह (12 जून 2012)। "मध्य राजस्थान के पास अपनी प्यास बुझाने के लिए सिर्फ बीसलपुर बांध है"। द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया।
8. विजय पी. सिंह; राम नारायण यादव (2003)। जल संसाधन प्रणाली संचालन. सहयोगी। पी। 323. आईएसबीएन 978-81-7764-548-4.
9. "रेगिस्तानी राज्य से बोतलबंद पानी जल्द ही बाजार तक पहुंचेगा"। द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया। 23 अक्टूबर 2016.
10. "जयपुर की जीवनरेखा बीसलपुर बांध लबालब भर गया"। द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया। 17 जुलाई 2022.
11. जॉयचेन जोसेफ (29 अक्टूबर 2016)। "पीएचईडी ने बीसलपुर परियोजना के दूसरे चरण का प्रस्ताव रखा है"। द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया।
12. "पुष्कर तालाब को बीसलपुर से पानी मिलता है"। द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया। 9 नवंबर 2021